International Journal for Multidisciplinary Research (IJFMR)
E-ISSN: 2582-2160 ● Website: www.ijfmr.com ● Email: editor@ijfmr.com

# महात्मा गांधी के शैक्षिक चिंतन एवं नई शिक्षा नीति 2020 पर अध्ययनः (भारतीय परिप्रेक्ष्य में)

**Poonam Kushwaha[1], Anil Kumar Singh Kushwaha[2]**

[1]Research Scholar, College of Education, IIMT University Meerut U.P. India.
[2]Assistant Professor, Ganga College of Education, Dujana, (Jhajhar) Hariyana, India.

**अमूर्त**

*महात्मा गांधी का शैक्षिक चिंतन भारतीय शिक्षा की आत्मा को जागृत करने वाला दर्शन है। उनका मानना था कि शिक्षा केवल ज्ञान प्राप्ति का साधन नहीं, बल्कि आत्मनिर्भर, नैतिक और सामाजिक रूप से उत्तरदायी नागरिक बनाने की प्रक्रिया है। उन्होंने 'बुनियादी शिक्षा' या 'नई तालीम' का सुझाव दिया जिसमें बालक के मस्तिष्क, हृदय और हाथ का समविकसित प्रशिक्षण हो। शिक्षा श्रम से जुड़ी होनी चाहिए, मातृभाषा में दी जाए और चरित्र निर्माण पर आधारित हो।*

*सन् 2020 में भारत सरकार ने जो नई शिक्षा नीति घोषित की, उसमें गांधीजी के कई विचारों की झलक स्पष्ट रूप से देखी जा सकती है। जैसे कि प्रारंभिक शिक्षा मातृभाषा में देना, कक्षा 6 से व्यावसायिक शिक्षा का आरंभ, नैतिक शिक्षा पर बल, लचीलापन और समावेशिता जैसे बिंदु गांधीवादी शिक्षा के मूल तत्व हैं।*

*हालाँकि, नीति में वैश्वीकरण, डिजिटल शिक्षा और निजीकरण जैसे कुछ ऐसे तत्व भी हैं जो गांधीजी के शुद्ध समाज–सेवी दृष्टिकोण से भिन्न हैं। परंतु यह भी स्पष्ट है कि नई शिक्षा नीति 2020 ने गांधीजी के शैक्षिक चिंतन को आधुनिक संदर्भ में अपनाने की दिशा में ठोस प्रयास किया है।*

*इस अध्ययन से निष्कर्ष निकलता है कि गांधीवादी शिक्षा और नई शिक्षा नीति 2020 दोनों का समन्वय भारतीय शिक्षा प्रणाली को मूल्यनिष्ठ, व्यावसायिक और आत्मनिर्भर बनाने में सक्षम है। आवश्यकता है कि इस नीति को जमीनी स्तर पर लागू कर गांधीजी के सपनों की 'समग्र शिक्षा' को साकार किया जाए।*

**मुख्य शब्द–** महात्मा गांधी, शैक्षिक चिंतन, बुनियादी शिक्षा, नई शिक्षा नीति 2020, बाल–केंद्रित शिक्षा, मातृभाषा, कला शिक्षा, नवाचार, समग्र विकास।

## प्रस्तावना

भारत में शिक्षा का इतिहास अत्यंत समृद्ध रहा है। गुरुकुल परंपरा से लेकर आधुनिक शिक्षा प्रणाली तक, हर चरण में शिक्षा का स्वरूप समय और आवश्यकता के अनुसार बदलता रहा है। स्वतंत्रता संग्राम के समय जब औपनिवेशिक शिक्षा प्रणाली भारतीय समाज को केवल नौकरी के लिए तैयार करने लगी थी, तब महात्मा गांधी ने स्वदेशी और मूल्य–आधारित शिक्षा का विचार प्रस्तुत किया, जिसे उन्होंने "बुनियादी शिक्षा" कहा।

21वीं सदी के तीसरे दशक में भारत सरकार ने नई शिक्षा नीति 2020 की घोषणा की, जो भारत के भविष्य को आकार देने की दिशा में एक महत्त्वपूर्ण प्रयास है। यह नीति वैश्विक प्रतिस्पर्धा के साथ–साथ भारत की जड़ों से जुड़ी शिक्षा की बात करती है। इस शोध में हम गांधी जी के शैक्षिक विचारों का मूल्यांकन करते हुए, नई शिक्षा नीति 2020 के साथ उनकी तुलनात्मक समीक्षा भारतीय परिप्रेक्ष्य में प्रस्तुत करेंगे।

## 1. महात्मा गांधी के शैक्षिक चिंतन का परिचय

### 1.1 गांधीजी के अनुसार शिक्षा की परिभाषा

महात्मा गांधी के अनुसार –

"शिक्षा का उद्देश्य केवल ज्ञान प्राप्त करना नहीं, बल्कि चरित्र निर्माण, आत्मनिर्भरता और समाज सेवा होना चाहिए।"

गांधी जी की दृष्टि में शिक्षा एक नैतिक प्रक्रिया है, जो व्यक्ति के मस्तिष्क, हृदय और हाथ का समान रूप से विकास करती है।

### 1.2 शिक्षा के मूल उद्देश्य

महात्मा गांधी के अनुसार शिक्षा का मूल उद्देश्य व्यक्ति के सर्वांगीण विकास को सुनिश्चित करना था। वे शिक्षा को केवल पुस्तकीय ज्ञान तक सीमित नहीं मानते थे, बल्कि उसका उद्देश्य जीवन के लिए तैयार करना होना चाहिए। गांधीजी का मानना था कि सच्ची शिक्षा वह

है जो शरीर, मन और आत्मा – तीनों का समवेत विकास कर सके। उनकी 'बुनियादी शिक्षा' (नई तालीम) योजना का प्रमुख उद्देश्य था कि शिक्षा कार्य और शिल्प के माध्यम से दी जाए जिससे बालक आत्मनिर्भर बन सके। उनका विचार था कि शिक्षा जीवन के साथ जुड़ी होनी चाहिए और उसमें नैतिकता, स्वावलंबन, श्रम के प्रति सम्मान और सत्य–अहिंसा जैसे जीवन–मूल्य समाहित होने चाहिए। गांधीजी का यह भी मत था कि शिक्षा में मातृभाषा का उपयोग होना चाहिए ताकि बालक सहजता से ज्ञान प्राप्त कर सके। उनका उद्देश्य ऐसी शिक्षा देना था जो न केवल ज्ञान प्रदान करे बल्कि व्यक्ति को एक अच्छा नागरिक और मानवता से जुड़ा संवेदनशील व्यक्ति भी बनाए। इस प्रकार गांधीजी की दृष्टि में शिक्षा का उद्देश्य आत्मनिर्भर, नैतिक, और समाजसेवी व्यक्तित्व का निर्माण करना था।

**गांधी जी ने शिक्षा के चार प्रमुख उद्देश्य बताए:**

1–चरित्र निर्माण, 2–श्रम की प्रतिष्ठा, 3–स्वावलंबन, 4–राष्ट्र निर्माण में सहयोग

उनका मानना था कि शिक्षा ऐसी होनी चाहिए जो जीवन से जुड़ी हो, जिससे विद्यार्थी समाज के प्रति अपने उत्तरदायित्व को समझ सके।

## 2. गांधीजी की 'बुनियादी शिक्षा' (Nai Talim)

### 2.1 वर्धा शिक्षा योजना (1937)

1937 में वर्धा सम्मेलन में गांधी जी ने **'बेसिक एजुकेशन'** या **'बुनियादी शिक्षा'** की अवधारणा प्रस्तुत की। इसका उद्देश्य ऐसी शिक्षा देना था जो बालक को व्यावहारिक, नैतिक और आत्मनिर्भर बनाए।

### 2.2 बुनियादी शिक्षा की विशेषताएं

महात्मा गांधी द्वारा प्रतिपादित बुनियादी शिक्षा या नई तालीम एक ऐसी शैक्षिक प्रणाली है जो बच्चे के मस्तिष्क, हृदय और हाथ कृ तीनों का समन्वित विकास सुनिश्चित करती है। इसकी नींव 1937 में वर्धा शिक्षा योजना के रूप में रखी गई थी। इस प्रणाली की मुख्य विशेषताएं निम्नलिखित हैं:

1. **हस्तकला आधारित शिक्षा:** बुनियादी शिक्षा का केंद्र बिंदु कोई न कोई उत्पादक हस्तकला (जैसे कताई, बुनाई, कागज बनाना आदि) होती थी। इससे न केवल शारीरिक श्रम का सम्मान सिखाया जाता था, बल्कि बच्चों में आत्मनिर्भरता भी विकसित होती थी।
2. **मातृभाषा में शिक्षा:** गांधीजी ने प्रारंभिक शिक्षा मातृभाषा में देने पर जोर दिया ताकि बच्चे सहजता से ज्ञान ग्रहण कर सकें।
3. **नैतिक एवं चारित्रिक विकास:** सत्य, अहिंसा, संयम, सेवा और सहयोग जैसे जीवन मूल्यों का समावेश शिक्षा प्रक्रिया में अनिवार्य रूप से किया गया।
4. **आत्मनिर्भरता:** शिक्षा को आजीविका से जोड़कर ऐसा बनाया गया कि विद्यार्थी अपनी शिक्षा के दौरान कुछ हद तक आर्थिक रूप से स्वतंत्र बन सके।
5. **समग्र विकास:** यह शिक्षा प्रणाली केवल पाठ्यज्ञान तक सीमित न रहकर शारीरिक, मानसिक, नैतिक व सामाजिक सभी पहलुओं का संतुलित विकास करती थी।
6. **श्रम की प्रतिष्ठा:** यह विचारधारा हर प्रकार के श्रम को सम्मानजनक मानती है और विद्यार्थियों को श्रम से जुड़ने के लिए प्रेरित करती है।

इस प्रकार, बुनियादी शिक्षा भारतीय समाज के पुनर्निर्माण की एक व्यावहारिक एवं नैतिक दृष्टि थी, जो आज भी प्रासंगिक है।

### 2.3 गांधीजी के कथन

महात्मा गांधी का मानना था कि "सच्ची शिक्षा वही है जो शरीर, मस्तिष्क और आत्मा का समन्वित विकास करे।" उन्होंने कहा – "शिक्षा का उद्देश्य चरित्र निर्माण, आत्मनिर्भरता और सेवा भावना का विकास होना चाहिए।"

उनके अनुसार शिक्षा ऐसी होनी चाहिए जो जीवन से जुड़ी हो और व्यक्ति को राष्ट्र के निर्माण में सक्षम बनाए। उन्होंने यह भी कहा – "अगर शिक्षा जीवन की चुनौतियों का सामना करने योग्य न बना सके, तो वह व्यर्थ है।"

गांधीजी ने शिक्षा को 'सत्य और अहिंसा की प्रयोगशाला' माना, जिसमें सेवा, सादगी और श्रम का सम्मान केंद्र में हो। साथ ही यह भी कहां है कि– "असली शिक्षा वही है जो बालक या बालिका को जीवन भर कमाने योग्य बना दे।"

## 3. नई शिक्षा नीति 2020: भारतीय संदर्भ में

### 3.1 नीति का उद्देश्य

भारत सरकार द्वारा घोषित नई शिक्षा नीति 2020 (NEP 2020) का उद्देश्य एक समावेशी, समतामूलक, बहुभाषिक, नैतिक एवं तकनीकी दृष्टि से सक्षम शिक्षा प्रणाली की स्थापना करना है, जो 21वीं सदी की आवश्यकताओं के अनुरूप हो तथा भारत की सांस्कृतिक विरासत और मूल्यों पर आधारित हो। इसके प्रमुख उद्देश्य निम्नलिखित हैं:

**गुणवत्तापूर्ण शिक्षा की उपलब्धता:** सभी स्तरों पर गुणवत्तापूर्ण शिक्षा सुनिश्चित करना, विशेषतः वंचित वर्गों और ग्रामीण क्षेत्रों में।

**समावेशी और समान शिक्षा:** सभी जाति, वर्ग, लिंग और क्षेत्र के विद्यार्थियों के लिए समान अवसर प्रदान करना।

**मातृभाषा एवं बहुभाषिक शिक्षा:** कक्षा 5 तक (यदि संभव हो तो कक्षा 8 तक) मातृभाषा या स्थानीय भाषा में शिक्षा को बढ़ावा देना।
**मूल्य–आधारित शिक्षा:** नैतिकता, संवैधानिक मूल्यों, सहानुभूति, करुणा, वैज्ञानिक दृष्टिकोण और वैश्विक नागरिकता जैसे गुणों का विकास करना।
**आजीवन अधिगम (Lifelong Learning):** छात्रों में जिज्ञासा, रचनात्मकता, आलोचनात्मक सोच और नवाचार की भावना को प्रोत्साहित करना।
**तकनीकी एकीकरण:** डिजिटल लर्निंग, ऑनलाइन शिक्षा और आधुनिक तकनीकों के माध्यम से शिक्षण की गुणवत्ता में सुधार करना।
**व्यावसायिक शिक्षा:** कक्षा 6 से ही व्यावसायिक शिक्षा और इंटर्नशिप की सुविधा देकर विद्यार्थियों को कौशल आधारित बनाना।
**शिक्षकों का सशक्तिकरण:** शिक्षकों के प्रशिक्षण, मूल्यांकन और करियर ग्रोथ के अवसर प्रदान कर उन्हें प्रेरित और सक्षम बनाना।
नई शिक्षा नीति 2020 का उद्देश्य केवल अकादमिक उपलब्धियों तक सीमित नहीं है, बल्कि यह एक समग्र, समावेशी और आत्मनिर्भर भारत के निर्माण की दिशा में शिक्षा को सशक्त माध्यम बनाना चाहती है।

### 3.2 प्रमुख विशेषताएं

भारत सरकार ने 29 जुलाई 2020 को नई शिक्षा नीति (NEP 2020) की घोषणा की, जो 34 वर्षों के बाद भारतीय शिक्षा प्रणाली में एक ऐतिहासिक बदलाव है। इसका उद्देश्य 21वीं सदी की आवश्यकताओं के अनुसार एक समावेशी, लचीली, बहुआयामी और समग्र शिक्षा प्रणाली का निर्माण करना है। इस नीति की प्रमुख विशेषताएँ निम्नलिखित हैं:

**स्कूल शिक्षा का नया ढांचा (5+3+3+4)**

NEP 2020 ने पारंपरिक 10+2 प्रणाली को हटाकर नया शैक्षिक ढांचा (5+3+3+4) लागू किया है:

5 वर्ष: फाउंडेशनल स्टेज (3 वर्ष प्री–स्कूल + कक्षा 1 और 2)

3 वर्ष: प्रिपरेटरी स्टेज (कक्षा 3 से 5 तक)

3 वर्ष: मिडिल स्टेज (कक्षा 6 से 8 तक)

4 वर्ष: सेकेंडरी स्टेज (कक्षा 9 से 12 तक)

इस ढांचे का उद्देश्य प्रारंभिक शिक्षा को मजबूत करना और बाल विकास को वैज्ञानिक ढंग से समर्थन देना है।

**मातृभाषा में शिक्षा**

कक्षा 5 (कुछ मामलों में कक्षा 8 तक) तक की पढ़ाई मातृभाषा, स्थानीय भाषा या क्षेत्रीय भाषा में कराने की सिफारिश की गई है, ताकि बच्चे सहजता से ज्ञान ग्रहण कर सकें।

**संचालन में लचीलापन और बहुविषयक दृष्टिकोण**

नई नीति विद्यार्थियों को अपनी रुचि के अनुसार विषय चुनने की स्वतंत्रता देती है। विज्ञान, वाणिज्य और कला की पारंपरिक सीमाएँ समाप्त कर दी गई हैं। छात्र संगीत, खेल, व्यावसायिक शिक्षा जैसे पाठ्यक्रमों को भी अन्य विषयों के साथ पढ़ सकते हैं।

**कक्षा 6 से व्यावसायिक शिक्षा और कौशल विकास**

NEP 2020 के तहत कक्षा 6 से ही विद्यार्थियों को व्यावसायिक शिक्षा व इंटर्नशिप की सुविधा दी जाएगी, जिससे वे व्यवहारिक अनुभव प्राप्त कर सकें।

**नव मूल्यांकन प्रणाली**

अब केवल अंक आधारित मूल्यांकन की बजाय छात्रों की समग्र योग्यता जैसे दृ आलोचनात्मक सोच, नैतिकता, रचनात्मकता और संवाद कौशल पर आधारित मूल्यांकन प्रणाली अपनाई जाएगी।

**शिक्षक प्रशिक्षण और गुणवत्ता**

शिक्षकों के प्रशिक्षण और योग्यता पर विशेष बल दिया गया है। शिक्षक बनने के लिए B-Ed- पाठ्यक्रम को 4 वर्षीय समन्वित डिग्री में परिवर्तित किया गया है।

**उच्च शिक्षा में परिवर्तन**

4 वर्षीय स्नातक डिग्री प्रणाली लागू की गई है। जिसमें मल्टी एंट्री और मल्टी एग्जिट सिस्टम लाया गया है जिससे विद्यार्थी किसी भी चरण पर शिक्षा छोड़ने या पुनः प्रवेश करने के लिए स्वतंत्र हैं। Academic Bank of Credits (ABC) की स्थापना होगी जिसमें छात्रों की क्रेडिट जानकारी डिजिटल रूप में संरक्षित रहेगी।

**राष्ट्रीय शैक्षिक तकनीकी फोरम (NETF)**

तकनीक आधारित शिक्षा को बढ़ावा देने हेतु NETF की स्थापना की जाएगी। ऑनलाइन शिक्षा को प्राथमिकता दी जाएगी।

**राष्ट्रीय मूल्यांकन केंद्र** – PARAKH

स्कूल शिक्षा में मूल्यांकन को बेहतर और मानकीकृत बनाने के लिए एक स्वतंत्र निकाय PARAKH (Performance Assessment] Review and Analysis of Knowledge for Holistic Development) की स्थापना होगी।

**गुणवत्ता और समानता**

NEP 2020 का लक्ष्य गुणवत्तापूर्ण शिक्षा को देश के प्रत्येक कोने तक पहुंचाना है, जिससे सामाजिक और आर्थिक विषमताओं को कम किया जा सके।

## 4. गांधीजी के विचारों और NEP 2020 की तुलनात्मक समीक्षा

महात्मा गांधी का शैक्षिक चिंतन भारतीय शिक्षा की आत्मा को स्पर्श करता है। उन्होंने शिक्षा को केवल ज्ञान प्राप्ति का माध्यम नहींए बल्कि एक नैतिकए व्यावसायिक और समाजोपयोगी प्रक्रिया के रूप में देखा। दूसरी ओर नई शिक्षा नीति 2020 (NEP 2020) आधुनिक भारत की वैश्विक चुनौतियों को ध्यान में रखते हुए एक समग्र लचीली और नवाचारयुक्त शिक्षा प्रणाली प्रस्तुत करती है। यद्यपि दोनों की पृष्ठभूमि अलग.अलग हैं – गांधीजी औपनिवेशिक काल में भारतीय आत्मनिर्भरता और स्वदेशी मूल्यों की बात करते थे, जबकि NEP- 2020 वैश्वीकरण और डिजिटल युग की आवश्यकताओं पर आधारित है, फिर भी दोनों के बीच कई समानताएँ और भिन्नताएँ दृष्टिगोचर होती हैं।

**शिक्षा का उद्देश्य**

गांधीजी के अनुसार शिक्षा का उद्देश्य व्यक्ति के शरीरए मन और आत्मा का समवेत विकास है। वे नैतिकता, श्रम, स्वदेशीपन और आत्मनिर्भरता को शिक्षा का मूल मानते थे। NEP 2020 भी विद्यार्थियों के समग्र विकास (Holistic Development) की बात करती है, जिसमें संज्ञानात्मक, भावनात्मक, सामाजिक और नैतिक पक्षों पर ध्यान दिया गया है। इस प्रकार उद्देश्य की दृष्टि से दोनों में समानता है।

**कार्य आधारित शिक्षा**

गांधीजी की "नई तालीम" योजना शिक्षा में हस्तशिल्प, कृषि, कताई जैसे कार्यों को सम्मिलित करने की पक्षधर थी, ताकि बालक अपने श्रम से सीख सके और आत्मनिर्भर बन सके। NEP 2020 में भी कक्षा 6 से व्यावसायिक शिक्षा, कौशल विकास और इंटर्नशिप को अनिवार्य किया गया है। यह गांधीजी के कार्य.आधारित शिक्षा दृष्टिकोण से मेल खाता है।

**भाषा और मातृभाषा**

गांधीजी शिक्षा को मातृभाषा में देने के कट्टर समर्थक थे। NEP 2020 ने भी कक्षा 5 (या 8 तक) मातृभाषा /स्थानीय भाषा में शिक्षा देने की सिफारिश की है। यह भी एक सीधा साम्य है जो दोनों विचारधाराओं को जोड़ता है।

**शिक्षा की समावेशिता**

गांधीजी सभी वर्गों के लिए समान शिक्षा के पक्षधर थे और समाज के वंचित वर्गों तक शिक्षा पहुँचाने पर बल देते थे। NEP 2020 ने Digital Learning, Gender Inclusion Fund, और Special Education Zones के माध्यम से वंचित समुदायों को शिक्षा से जोड़ने का प्रयास किया है।

**शिक्षा में नैतिकता**

गांधीजी के लिए शिक्षा का मूल उद्देश्य था – सत्य, अहिंसा, करुणा और सेवा जैसे मूल्यों की स्थापना। NEP 2020 ने भी "मूल्य आधारित शिक्षा" (Value-Based Education) को एक प्रमुख स्तंभ माना है, जिसमें नैतिक शिक्षा को पाठ्यक्रम का हिस्सा बनाया गया है।

**मुख्य भिन्नताएँ**

जहाँ गांधीजी शिक्षा को ग्रामीण अर्थव्यवस्था और स्वदेशी उद्योगों से जोड़ना चाहते थे, वहीं NEP 2020 में ग्लोबल प्रतिस्पर्धा, डिजिटल शिक्षा, और बहुराष्ट्रीयता पर ज़ोर है। गांधीजी की शिक्षा प्रणाली अधिक स्थानीय और आत्मनिर्भर थी, जबकि NEP 2020 वैश्विक और तकनीकी रूप से उन्नत है।

## 5. भारतीय परिप्रेक्ष्य में समालोचनात्मक विश्लेषण

### 5.1 सकारात्मक पहलू

**भारतीय मूल्यों की पुनर्स्थापना:** भारत की शिक्षा प्रणाली का आधार प्राचीनकाल से ही नैतिकता, मानवता, करुणा, धर्म और समाज सेवा जैसे मूल्यों पर आधारित रहा है। वैदिक युग के गुरुकुलों में विद्यार्थियों को केवल पाठ्य ज्ञान ही नहीं, अपितु एक सदाचारी, अनुशासित और कर्तव्यपरायण नागरिक बनने का शिक्षण दिया जाता था। उपनिवेश काल में जब अंग्रेज़ी शिक्षा प्रणाली को लागू किया गया, तब भारतीय मूल्यों और संस्कृति को पीछे छोड़ दिया गया। इस परिप्रेक्ष्य में नई शिक्षा नीति 2020 (NEP 2020) भारतीय शिक्षा के मूलभूत आदर्शों की पुनर्स्थापना का प्रयास है।

**भारतीय ज्ञान परंपरा का पुनर्जागरण**

NEP 2020 भारतीय ज्ञान परंपरा जैसे वेद, उपनिषद, आयुर्वेद, योग, दर्शन, गणित, खगोल विज्ञान आदि को शैक्षिक पाठ्यक्रमों में

सम्मिलित करने की बात करती है। इससे न केवल भारत की सांस्कृतिक धरोहर से युवाओं का जुड़ाव बढ़ेगा, बल्कि आत्मगौरव भी विकसित होगा।

**नैतिकता एवं मूल्यों पर बल**

नई शिक्षा नीति में स्पष्ट उल्लेख है कि शिक्षा केवल रोजगार का साधन नहीं, बल्कि व्यक्तित्व निर्माण और सामाजिक जिम्मेदारी का मार्ग है। इसमें सत्य, अहिंसा, सेवा, संयम, सहिष्णुता जैसे मूल्यों के समावेशन पर बल दिया गया है, जो प्राचीन भारतीय दृष्टिकोण से मेल खाते हैं।

**मातृभाषा में शिक्षा**

नीति के अनुसार प्राथमिक शिक्षा मातृभाषा या स्थानीय भाषा में दी जाएगी, जिससे बालक सहज रूप से ज्ञान अर्जित कर सकेगा। यह विचार गांधीजी और डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन के भाषिक स्वाभिमान और भारतीयता के अनुरूप है।

**योग, ध्यान और भारतीय कला–संस्कृति का समावेश**

NEP 2020 में योग, ध्यान, संगीत, नृत्य और हस्तशिल्प को शिक्षा का अनिवार्य भाग बनाया गया है, जिससे विद्यार्थियों का शारीरिक, मानसिक और आत्मिक विकास हो सके। यह प्राचीन भारतीय शिक्षा प्रणाली की आधुनिक पुनरावृत्ति है।

**समावेशी और समान शिक्षा**

'वसुधैव कुटुम्बकम्' और 'सर्वे भवन्तु सुखिनः' जैसे सिद्धांतों को नीति में सामाजिक न्याय और समान अवसर की दृष्टि से लागू किया गया है। NEP 2020 शिक्षा को सभी के लिए सुलभ बनाकर भारतीय सामाजिक ताने–बाने को मजबूत करती है।

**श्रम की प्रतिष्ठा:** कार्य आधारित शिक्षा प्रणाली के द्वारा गांधीजी के श्रम–सम्मान को स्वीकार किया गया है।

**आत्मनिर्भर भारत की दिशा:** स्किल डेवलपमेंट और स्टार्टअप संस्कृति को बढ़ावा देकर गांधीजी की स्वराज की भावना को मूर्त रूप देने का प्रयास।

**5.2 चुनौतियाँ**

नई शिक्षा नीति 2020 (NEP 2020) भारतीय शिक्षा व्यवस्था में एक व्यापक और बहुप्रतीक्षित सुधार है, जिसका उद्देश्य भारत को ज्ञान आधारित, समावेशी और आत्मनिर्भर समाज की ओर अग्रसर करना है। यह नीति शिक्षा को मातृभाषा, नैतिकता, कौशल विकास और समग्र विकास से जोड़कर भारतीयता की पुनर्स्थापना का दावा करती है। किंतु जब हम इसका विश्लेषण गांधीजी के शैक्षिक विचारों और भारतीय सामाजिक यथार्थ के आलोक में करते हैं, तो कुछ महत्वपूर्ण चुनौतियाँ और अंतर्विरोध उभरकर सामने आते हैं।

**श्रम और कारीगरी का ह्रास**

गांधीजी की 'नई तालीम' प्रणाली शिक्षा को उत्पादक श्रम से जोड़ती थी, जहाँ विद्यार्थी सीखते हुए निर्माण करता था और आत्मनिर्भर बनता था। NEP 2020 में यद्यपि कक्षा 6 से व्यावसायिक शिक्षा की बात की गई है, किंतु यह कौशल आधारित शिक्षा अभी भी व्यावहारिक नहीं बन सकी है। निजी और शहरी विद्यालयों में इसे केवल एक औपचारिकता के रूप में अपनाया जा रहा है, जबकि ग्रामीण और सरकारी विद्यालयों में संसाधनों की भारी कमी है।

**मातृभाषा में शिक्षा की व्यवहारिक चुनौती**

गांधीजी ने मातृभाषा में शिक्षा को अत्यंत आवश्यक माना था, और NEP 2020 भी इसका समर्थन करती है। लेकिन भारत की भाषिक विविधता, शिक्षकों की उपलब्धता, और शहरी मध्यम वर्ग की अंग्रेज़ी–मुखी मानसिकता इस प्रयास में बाधा बन रही है। अंग्रेज़ी को छोड़कर मातृभाषा में शिक्षा देना अभी भी व्यवहारिक रूप से कठिन और अलोकप्रिय है।

**शिक्षा का बाजारीकरण**

गांधीजी शिक्षा को समाज सेवा और आत्मिक उन्नति का माध्यम मानते थे, जबकि NEP 2020 के तहत शिक्षा को ग्लोबल स्किल, इनोवेशन और टेक्नोलॉजी से जोड़कर एक प्रकार से बाज़ारी दृष्टिकोण को बढ़ावा दिया गया है। निजीकरण को अप्रत्यक्ष रूप से प्रोत्साहन मिलने के कारण, समानता और न्याय की मूल भावना प्रभावित हो रही है।

**सामाजिक विषमता की चुनौतियाँ**

गांधीजी ने वंचितों, दलितों और ग्रामीण समाज को शिक्षा से जोड़ने पर बल दिया था। NEP 2020 समावेशी शिक्षा की बात तो करती है, परंतु जमीनी स्तर पर ग्रामीण विद्यालयों, जनजातीय क्षेत्रों और अल्पसंख्यक समुदायों में गुणवत्तापूर्ण शिक्षा तक पहुंच अब भी बाधित है। डिजिटल शिक्षा और तकनीकी संसाधनों का अभाव, सामाजिक विषमता को और बढ़ा सकता है।

**नैतिक शिक्षा का व्यवहारिक अभाव**

हालाँकि नीति में नैतिकता और मूल्य–आधारित शिक्षा की बात की गई है, परंतु इसके लिए सुनियोजित पाठ्यक्रम, प्रशिक्षित शिक्षक और व्यवहारिक वातावरण का अभाव है। गांधीजी के अनुसार शिक्षा का सबसे बड़ा उद्देश्य था – चरित्र निर्माण, जो आज भी केवल शब्दों में सीमित दिखता है।

## 6. गांधीवादी शिक्षा के आधुनिक उपयोग

### 6.1 राष्ट्रीय शिक्षा नीति में उपयोग

महात्मा गांधी द्वारा प्रतिपादित 'नई तालीम' (बेसिक एजुकेशन) केवल शिक्षा पद्धति नहीं, बल्कि एक संपूर्ण जीवन–दृष्टि थी। उन्होंने शिक्षा को व्यक्ति के सर्वांगीण विकास, सामाजिक समरसता और आत्मनिर्भरता का साधन माना। गांधीजी की शिक्षा–व्यवस्था में श्रम, नैतिकता, मातृभाषा, आत्मनिर्भरता और ग्रामीण जीवन से जुड़ाव को केंद्रीय स्थान प्राप्त था। वर्तमान में जब नई शिक्षा नीति 2020 (NEP 2020) को लागू किया जा रहा है, तो यह विचारणीय है कि गांधीजी की शिक्षात्मक दृष्टि किस प्रकार आधुनिक शिक्षा व्यवस्था में उपयोगी और प्रासंगिक है।

**श्रम एवं कार्य–आधारित शिक्षा का समावेश**

गांधीजी के अनुसार, "शिक्षा ऐसी होनी चाहिए जो बच्चों को जीवन यापन के लिए तैयार करे और उनके हाथों को काम में लगाए।" NEP 2020 इसी सोच को अपनाते हुए कक्षा 6 से व्यावसायिक शिक्षा और इंटर्नशिप को अनिवार्य करती है। यह बच्चों को केवल किताबी ज्ञान नहीं, बल्कि व्यावहारिक कौशल और आत्मनिर्भरता प्रदान करने की दिशा में एक ठोस प्रयास है।

**मूल्य–आधारित शिक्षा**

गांधीजी ने शिक्षा के माध्यम से सत्य, अहिंसा, करुणा, सहिष्णुता और संयम जैसे मूल्यों के विकास पर बल दिया। NEP 2020 भी शिक्षा को केवल रोजगार का माध्यम न मानकर, चरित्र निर्माण और नैतिकता आधारित नागरिक निर्माण का साधन मानती है। नीति में यह कहा गया है कि मूल्य–आधारित शिक्षा को पाठ्यचर्या का अभिन्न भाग बनाया जाएगा – यह गांधीवादी दृष्टि का स्पष्ट प्रतिफल है।

**मातृभाषा में शिक्षा का प्रयोग**

गांधीजी का मानना था कि शिक्षा मातृभाषा में ही दी जानी चाहिए ताकि विद्यार्थी सहजता से ज्ञान अर्जन कर सके। NEP 2020 इसी सिद्धांत को लागू करते हुए कक्षा 5 तक (और जहाँ संभव हो कक्षा 8 तक) मातृभाषा या स्थानीय भाषा में शिक्षा की बात करती है। यह केवल भाषाई सुविधा नहीं, बल्कि संस्कृति और परंपरा के संरक्षण का माध्यम भी है।

**शिक्षा और समाज का सम्बन्ध**

गांधीजी शिक्षा को समाज सेवा से जोड़ना चाहते थे। उनकी शिक्षा समाज में समानता, सहयोग और ग्राम विकास की भावना पैदा करती थी। NEP 2020 में भी समुदाय भागीदारी, स्थानीय संदर्भों में पाठ्यचर्या, और सामाजिक जिम्मेदारी पर बल दिया गया है। यह शिक्षा को समाजोन्मुखी बनाने की दिशा में सकारात्मक कदम है।

**समावेशी और समान शिक्षा**

गांधीजी ने 'अंत्योदय' अर्थात अंतिम व्यक्ति के कल्याण को प्राथमिकता दी। NEP 2020 शिक्षा को सभी वर्गों के लिए सुलभ बनाने का संकल्प लेती है, विशेषकर अनुसूचित जातियों, जनजातियों, दिव्यांगों और वंचित वर्गों को मुख्यधारा से जोड़ने हेतु विभिन्न योजनाएँ प्रस्तावित की गई हैं।

**लाइफ स्किल्स आधारित शिक्षा**

गांधीजी की शिक्षा प्रणाली जीवन के लिए तैयार करने वाली शिक्षा थी, जिसमें आत्मनिर्भरता, नैतिकता, सहकारिता, संवाद–कौशल और समस्या–समाधान जैसे जीवन कौशलों को प्रमुखता दी गई थी। नई शिक्षा नीति 2020 भी शिक्षा को केवल अकादमिक न मानकर, विद्यार्थियों के कौशल विकास और संपूर्ण व्यक्तित्व निर्माण का माध्यम मानती है। इसमें लाइफ स्किल्स जैसे संप्रेषण, आलोचनात्मक चिंतन, निर्णय क्षमता आदि को पाठ्यचर्या में समाहित किया गया है। इस प्रकार NEP 2020 गांधीवादी मूल्यों के अनुरूप व्यवहारिक, नैतिक और जीवन उपयोगी शिक्षा को बढ़ावा देती है।

### 6.2 गांधी दर्शन के प्रभावी एकीकरण हेतु सुझाव

नई शिक्षा नीति 2020 में गांधी दर्शन के प्रभावी एकीकरण हेतु कुछ ठोस सुझाव अपनाए जा सकते हैं। सबसे पहले, कार्य–आधारित शिक्षा (श्रम आधारित शिक्षा) को केवल वैकल्पिक न रखकर अनिवार्य और व्यवहारिक बनाया जाए, जिससे आत्मनिर्भरता एवं स्वाभिमान विकसित हो। मातृभाषा में शिक्षा को प्रभावी ढंग से लागू करने के लिए स्थानीय शिक्षक प्रशिक्षण और पाठ्य सामग्री का विकास किया जाए। गांधीजी के मूल्य शिक्षा, जैसे सत्य, अहिंसा, सेवा और सह–अस्तित्व को प्राथमिक कक्षाओं से लेकर उच्च शिक्षा तक समाहित किया जाए। विद्यालयों में सामुदायिक सेवा, ग्राम विकास और स्वच्छता अभियान जैसे गतिविधियाँ लागू की जाएँ। शिक्षा को नौकरी केंद्रित न बनाकर जीवन उपयोगी, चरित्र निर्माण और समाज सेवा की दिशा में प्रेरित किया जाए। इस प्रकार गांधीवादी दृष्टिकोण को NEP 2020 के क्रियान्वयन में एक सशक्त आधार बनाकर भारतीय शिक्षा को अधिक आत्मनिर्भर, नैतिक और समरस बनाया जा सकता है।

## 7. निष्कर्ष

नई शिक्षा नीति 2020 ने शिक्षा के क्षेत्र में एक सकारात्मक दिशा अवश्य दी है, किंतु जब हम इसका मूल्यांकन भारतीय परिप्रेक्ष्य और गांधीवादी सोच के आलोक में करते हैं, तो इसकी क्रियान्वयन प्रक्रिया में अनेक चुनौतियाँ और विरोधाभास सामने आते हैं। यदि इन

चुनौतियों का समाधान नहीं किया गया, तो यह नीति केवल एक आदर्श दस्तावेज बनकर रह जाएगी। आवश्यक है कि नीति को स्थानीय जरूरतों, गांधीवादी मूल्यों और सामाजिक समरसता के साथ संतुलित किया जाए, ताकि यह वास्तव में एक "भारतीय शिक्षा नीति" सिद्ध हो सके।

गांधी जी का शैक्षिक दर्शन भारतीय समाज की आत्मा को शिक्षित करने का कार्य करता है। उनका विचार था कि शिक्षा ऐसी हो जो समाज के अंतिम व्यक्ति तक पहुंचे, जिसमें श्रम का सम्मान हो, भाषा के रूप में मातृभाषा हो और उद्देश्य केवल रोजगार नहीं, बल्कि जीवन निर्माण हो सके।

नई शिक्षा नीति 2020 भारतीय शिक्षा में खो चुके संस्कार, सांस्कृतिक आत्मा, नैतिक अनुशासन और आत्मनिर्भरता जैसे मूल्यों को पुनः जागृत करने का कार्य करती है। यह नीति आधुनिक विज्ञान और वैश्विक दृष्टिकोण के साथ–साथ भारतीय परंपरा और सांस्कृतिक गर्व को संतुलित करती है। इस प्रकार, यह भारत को एक ज्ञान–प्रधान, मूल्याधारित और आत्मनिर्भर राष्ट्र बनाने की दिशा में एक सशक्त कदम है। नई नीति में नैतिकता, संस्कृति और मातृभाषा के समावेश ने गांधीजी के विचारों को पुनर्जीवित किया है।

गांधीजी की शिक्षा–नीति भले ही स्वतंत्र भारत के शुरुआती वर्षों में उपेक्षित रही हो, परंतु आज NEP 2020 के माध्यम से उनके विचार नवीन संदर्भों में पुनः प्रासंगिक होते दिखाई दे रहे हैं। कार्य–आधारित शिक्षा, नैतिकता, मातृभाषा, आत्मनिर्भरता और समाजोन्मुखता – ये सभी तत्व गांधीवादी शिक्षा के मूल आधार हैं, जिन्हें NEP 2020 ने आधुनिक युग में समाहित किया है। आवश्यकता केवल इतनी है कि इन आदर्शों को नीति–निर्माण से आगे ले जाकर व्यवहार में उतारा जाए। तभी गांधीजी की शिक्षा भारतीय समाज के निर्माण में वास्तविक रूप से उपयोगी सिद्ध हो सकेगी।

नई शिक्षा नीति 2020 में अनेक पहलुओं में गांधीजी के विचारों की झलक मिलती है, विशेषकर श्रम आधारित शिक्षा, मातृभाषा में अध्ययन, नैतिकता और जीवन कौशल पर बल प्रदान करना। परंतु नीति के बाजारीकरण और वैश्विक प्रतिस्पर्धा के दबाव में गांधीवादी शिक्षा का मूल तत्व – 'साधन की पवित्रता' – प्रभावित होता दिखता है।

भारतीय परिप्रेक्ष्य में नई शिक्षा नीति को तभी सफल माना जाएगा जब वह गांधीजी के आदर्शों को केवल दस्तावेजों तक न रखे, बल्कि उन्हें क्रियान्वित कर ग्रामीण भारत तक पहुँचाए।

## 8. सिफारिशें (Recommendations)

1. गांधीजी के बुनियादी शिक्षा मॉडल को NEP के तहत स्कूलों में एकीकृत किया जाए।
2. शिक्षा के बाजारीकरण पर नियंत्रण रखते हुए समाज–सेवा आधारित मॉडल को बढ़ावा दिया जाए।
3. शिक्षक प्रशिक्षण में गांधीवादी शिक्षा दर्शन को अनिवार्य रूप से सम्मिलित किया जाए।
4. मातृभाषा में गुणवत्तापूर्ण सामग्री की समुचित उपलब्धता सुनिश्चित की जाए।
5. शिक्षा में स्थानीयता, व्यावसायिकता और नैतिकता के समन्वय को और मजबूती दी जाए।

## 9. संदर्भ ग्रंथ सूची (References)

1. गांधी, एम.के. (1937). Towards New Education- नवजीवन प्रकाशन, अहमदाबाद।
2. भारत सरकार. (2020). नई शिक्षा नीति 2020, शिक्षा मंत्रालय, नई दिल्ली।
3. कुमार, कृष्ण. (2001). Political Agenda of Education- सेज पब्लिकेशन।
4. रमेश, एस. (2021). गांधीवादी शिक्षा दर्शनरू आधुनिक मूल्यांकन, भारतीय शिक्षाशास्त्र परिषद।
5. मिश्रा, आर. (2022). भारतीय शिक्षारू अतीत, वर्तमान और भविष्य, राजकमल प्रकाशन।
6. बद्रीनाथ कपूर – भारतीय शिक्षा का इतिहास।
7. डॉ. रामचंद्र शुक्ल – महात्मा गांधी के शैक्षिक विचार।
8. डॉ. के. एल. श्रीवास्तव – भारतीय संस्कृति और मूल्य।
9. महर्षि पतंजलि – योगदर्शन।
10. भारत सरकार – नई शिक्षा नीति 2020 दस्तावेज।
11. डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन – शिक्षा आयोग रिपोर्ट (1948–49)।